

भारतीय अर्थव्यवस्था में महिला सशक्तिकरण की भूमिका

मोहम्मद जावेद खान*

सार

महिला सशक्तिकरण स्वयं विस्तृत करता है कि सामाजिक अधिकार, राजनीतिक अधिकार, एगोनॉमिक स्थिरता, ताकत और अन्य सभी अधिकार दानो लिंग के लिए समान होने चाहिए। भारत के सबसे महान सपुतों में से एक स्वामी विवेकानंद ने कहा कि पुरुष और महिला के बीच कोई भेद-भाव नहीं होना चाहिए, भदुनिया के कल्याण का कोई मौका नहीं है जब तक कि महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता है, एक पक्षी के लिए यह सम्भव नहीं है कि वो केवल एक पंख पर उड़े। भारत को विशाल महिला शक्ति को एक प्रभावी मानव संसाधन में बदलने की जरूरत है और यह केवल सशक्तिकरण या महिलाओं के माध्यम से ही संभव है भारत सरकार महिला सशक्तिकरण के लिए राज्य और केन्द्र दोनों स्तरों पर विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं चला रही है। सभी राजनीतिक और कार्यक्रम विभिन्न आयु समुह में महिलाओं के सामाजिक आर्थिक और शैक्षिक सशक्तिकरण पर केन्द्रित है। आज यह अनुमान लगाया जाता है कि हर साल 6 मिलियन महिलाएं गायब होती हैं (शब्द बैंक 2021) इनमें से 23 प्रतिशत कभी पैदा नहीं होती, और 10 प्रतिशत गायब है प्रारंभिक बचपन में प्रजनन के वर्षों में 21 प्रतिशत, और 60 वर्ष से अधिक आयु के 38 प्रतिशत प्रत्यय लापता महिलाओं के अलावा कई और महिलाएं हैं जो शिक्षा, नौकरी या राजनीतिक जिम्मेदारी प्राप्त करने में विफल रहती हैं, महिलाओं के सापेक्ष अभाव और पिछले 20 वर्षों में जिस हद तक सुधार हुआ है, दोनों ही कई क्षेत्रों में स्पष्ट है। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में शिक्षा की पहुंच में माध्यमिक विद्यालय में लड़कियों के लिए नामांकन 2010 में 34 प्रतिशत थी, जबकि लड़कों के लिए ये 41 प्रतिशत थी। इस बीच प्राथमिक विद्यालय में नामांकन लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए लगभग सार्वभौमिक हो गया है। श्रम बाजार के अवसरों में महिलाओं के काम करने की संभावना कम होती है, व समान काम के लिए पुरुषों की तुलना में कम कमाती है, और जब वे काम करती हैं तो उनके गरीबी में रहने की संभावना अधिक होती है। महिलाएं घर के कामकाज पर लगभग दोगुना समय, बच्चों की देखभाल पर लगभग 5 गुना अधिक समय और पुरुषों की तुलना में बाजार के काम पर लगभग आधा समय बिताती हैं। राजनीतिक प्रतिनिधित्व में महिलाओं ने जुलाई 2011 में संसद के नीचले और ऊपरी सदनों के सदस्यों का सिर्फ 19.4 प्रतिशत हिस्सा बनाया। कानूनी अधिकारों में, कई देशों में महिलाओं को अभी भी जमीन के मालिक होने, सम्पत्ति का प्रबंधन करने, व्यवसाय करने या अपने पति के बिना यात्रा करने की स्वतंत्र अधिकारों का अभाव है। अनुमति। अर्थव्यवस्थाओं के विकास और महिला सशक्तिकरण के बीच एक द्विदिश संबंध है, जिसे विशेष रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा अर्जन के अवसर अधिकारों और राजनीतिक भागीदारी में गटक या विकास तक पहुंचने के लिए महिलाओं की क्षमता में सुधार के रूप में परिभाषित किया गया है। एक दिशा में, अकेले विकास पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानताओं को कम करने में एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है, दूसरी दिशा में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव जारी रहता है जैसा कि सेन ने जोरदार तर्क किया है और विकास को बाधित कर सकता है, दूसरे शब्दों में सशक्तिकरण विकास को गति दे सकता है।

शब्दकोश: शैक्षिक सशक्तिकरण, आर्थिक सशक्तिकरण, राजनीतिक सशक्तिकरण, भागीदारी।

* शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

प्रस्तावना

महिला सशक्तिकरण और शिक्षा

विकास प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने के लिए शिक्षा ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। यह सभी के लिए ज्यादातर लड़कियों और महिलाओं के लिए जरूरी है क्योंकि यह अन्य अवसरों के लिए एक प्रवेश बिंदु है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा में निवेश से विशेष रूप से अधिक से अधिक लाभांश प्राप्त होता है। वर्तमान में 21वीं सदी में लड़के और लड़कियों की शिक्षा के मामले में कोई अंतर नहीं था। शिक्षित लड़कियां स्वास्थ्य देखभाल के महत्व और अपने बच्चों की जरूरतों को पहचान सकती हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की साक्षरता दर कम है। अंततः महिलाओं को शिक्षित किया जाएगा तो अर्थव्यवस्था में स्थिति में सुधार होगा। जिससे वे अधिक संख्या में अवसरों का लाभ उठा सकते हैं और पहले की तुलना में अधिक मजबूत और शक्तिशाली बन सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

- महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास के बीच संबंध का अध्ययन करना। महिला सशक्तिकरण और शिक्षा के बीच संबंधों की जांच करना।
- महिला सशक्तिकरण और गरीबी के स्तर के बीच संबंध को समझने के लिए।
- आज भारतीय महिलाओं के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं का पता लगाने के लिए।

अधिकारिता के प्रमुख प्रकार हैं:-

- **शैक्षिक सशक्तिकरण:** - जीवन में प्रगति के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है इसका अर्थ है ज्ञान के साथ महिलाओं को सशक्त बनाना कौशल विकास प्रक्रिया में पूरी तरह से भाग लेने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास इसका अर्थ है महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करना और उन पर दावा करने के लिए आत्मविश्वास विकसित करना।

सामाजिक महिला सशक्तिकरण

महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू लैंगिक समानता का बढ़ावा देना है, महिलाओं को आज कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है चाहे वह अपने परिवार के लिए आय सुनिश्चित करने के लिए साबुन और लाइसेंस बनाना हो।

- **आर्थिक सशक्तिकरण:-** इसका तात्पर्य महिलाओं के स्वामित्व और प्रबंधन वाली स्थायी आजीविका के लिए भौतिक जीवन की बेहतर गुणवत्ता से है आर्थिक विकास और महिलाओं के कानूनी अधिकारों के बीच एक मजबूत संबंध है।
- **राजनीतिक सशक्तिकरण:-** अस्तित्व या राजनीतिक व्यवस्था राजनीतिक निर्णय की प्रक्रिया में महिलाओं द्वारा भाग लेने के पक्ष में है और साशन में अन्य सरकारी नीतियों और निर्णयों को प्रभावित करते हुए ग्रामीण समुदायों पर प्रभाव, शहर आधारित लोगों की मान्यताओं को बदलना, सरकार में लोगों के साथ नेटवर्किंग करना और उद्योग और अन्य महिलाओं पर चर्चा करने के लिए और ग्रामीण समुदायों।
- **आर्थिक सशक्तीकरण:-** आर्थिक विकास और महिला सशक्तीकरण का द्विदिश संबंध है, जिसे महिलाओं के विकास के घटक तक पहुंचने की क्षमता के आयात के रूप में परिभाषित किया गया है। महिलाओं के अधिकारों में दिलचस्पी रखने वाली दुनिया आर्थिक विकास के पक्ष में है। भारतीय अर्थव्यवस्था महिलाएं कई तरह से योगदान करती हैं। सामाजिक ढांचे में उनके महत्व के अलावा, हमारी संस्कृति की रक्षा करने और उपभोग के दृष्टिकोण को निर्धारित करने में ग्रामीण केन्द्रित सामुदायिक तिक्षणता में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पुनः अर्थव्यवस्था के लिए विशेष बनाती है। उच्च वृद्धि के आंकड़ों भारतीय शत्रु का 8 से 9 प्रतिशत मूल रूप से उसके सकल घरेलू उत्पाद की उच्च दरों पर निर्भर करता है, जिसमें 70 प्रतिशत घरेलू बचत, 20 प्रतिशत नीजि क्षेत्र और 10 प्रतिशत हॉम सार्वजनिक क्षेत्र में आता है, देश में

हाउस हॉल्ड सेविंग सब महिलाओं की वजह से है क्योंकि ये भारतीय समाज की संस्कृति का एक हिस्सा बचत करना है। बढ़ते वैश्वीकरण और अर्थव्यवस्था के उधारीकरण के साथ साथ सेवाओं के नीजिकरण में वृद्धि के साथ, महिला 11 योजना के सशक्तिकरण रिपोर्ट स्वीकार करती है। पुरी तरह से महिलाएँ पीछे रह गयी है और सफलता का फल लेने में सक्षम नहीं है। यज्ञपि भारत में अधिकांश महिलाएँ किसी न किसी रूप में काम करती हैं और अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं महिलाएँ काम करते हुए खेतों की जुताई करती हैं और फसल काटती हैं और खेतों में महिलाएँ बुनाई करती हैं और उद्योगों में काम करते हुए हस्तशिल्प बनाती हैं। अनौपचारिक क्षेत्र में 90 प्रतिशत महिलाएँ शामिल हैं अनौपचारिक क्षेत्र में घरेलू नौकर के छोटे व्यापारियों के लिए उपयुक्त नौकरियाँ शामिल हैं। हम समजत हैं कि भारतीय महिलाओं के योगदान को न तो उचित रूप से जिम्मेदार ठहराया गया है और न ही हमारे नीति निर्माताओं के पास अर्थव्यवस्था के विकास के लिए महत्व या महिलाओं तक पहुँचने की दृष्टि है। महिला सशक्तिकरण और आर्थिक विकास— भारत की महिलाओं ने या तो सदियों पुरानी दास्ता और पुरुष वर्चस्व की बेड़ियों को फँलाया है और अपने आप में आ गयी है और गर्व व और सम्मान के साथ सामाजिक उन्नति को आगे बढ़ाना शुरू कर दिया है भारत में महिलाओं को अब राजनीतिक, सामाजिक घरेलू और शैक्षिक सहित सभी जीवन गतिविधियों में पुरुषों के साथ समान दर्जा दिया गया है। लेकिन फिर भी महिलाओं को गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है क्योंकि महिलाएँ कुल आबादी में सुरक्षित हैं। इसके लिए महिला सशक्तिकरण को देश के आर्थिक विकास में महिलाओं को शामिल करने के लिए कुछ हस्तक्षेप की आवश्यकता है। विकास हस्तक्षेप जो महिलाओं की आय और भौतिक संपत्ति सहित वास्तविक लिंग आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिससे महिला सशक्तिकरण में वृद्धि होगी और गरीबी में कमी आयेगी। इस हस्तक्षेप में से महिला सशक्तिकरण शुरू होगा और हद तक आगे बढ़ेगा। कुछ नये हस्तक्षेप के कार्यन्वयन से महिला सशक्तिकरण में वृद्धि की दर उल्लेखनीय रूप से बढ़ेगी। डुप्लो व्याख्या यह थी कि महिलाओं के अधिकारों और प्रतियक्ति सकल घरेलू उत्पाद या लागत लाभ गणना के बीच सकारात्मक सुधार हुआ था। इस नये बिंदु से यह स्पष्ट था कि महिला सशक्तिकरण में वृद्धि से आर्थिक विकास में वृद्धि हो सकती है।

आईएमएफ का अनुमान है कि कार्यबल में महिलाओं की समान भागीदारी से भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 27 प्रतिशत की वृद्धि होगी, महिलाएँ अपने परिवारों पर 90 प्रतिशत आय खर्च करती हैं, और आर्थिक रूप से सशक्त महिलाएँ मांग को बढ़ावा देती हैं, स्वस्थ और बेहतर शिक्षित बच्चे और मानव विकास के स्तर को बढ़ाती हैं।

निष्कर्ष

सामाजिक, आर्थिक, सक्षित, राजनीतिक, और कानूनी रूप से महिलाओं को सशक्तिकरण एक कठिन कार्य होने जा रहा है। महिलाओं के प्रति अनादर की संस्कृति को बदलना आसान नहीं होगा केवल क्रांति एक दिन में बदलाव ला सकती है, लेकिन सुधारों में समय लगता है अर्थव्यवस्था में महिलाओं को विशिष्ट स्थान है। यदि महिलाओं को आर्थिक मजबूती मिलती है तो वे निर्णय लेने की क्षमता और आय सर्जन की आय में महिलाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी महिला सशक्तिकरण दिशा में महत्वपूर्ण निरंतरता बनाती है, उद्यमिता महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में मदद कर सकती है जो उन्हें सुधार या आत्मा की स्थिति में मदद कर सकती है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत सरकार (2021) मानव विकास रिपोर्ट। 2011: सामाजिक समावेश की ओर, ऑक्सफोर्ड
2. वर्ल्ड इकोनॉमिक्स फोरम (2012), द ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2012

